विचार बिन्दु

कार्य ही सफलता की बुनियाद है। –पाब्लो पिकासो

इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर तेजी से बढ़ता रुझान

क्या भारत में इलेक्ट्रिक व्हीकल खरीदने का सही समय आ गया है? ये सवाल इन दिनों हर उस शख़्स के मन में आता है जो नई गाड़ी खरीदने की सोच रहा होता है। कुछ लोग उन्हें यह सलाह देते हुए मिल जाते हैं कि हैं कि आने वाला समय इलेक्ट्रिक गाड़ियों का ही है तो उसी पर खर्च करो। वहीं कुछ लोग ऐसी सलाह देते हुए भी मिल जाते हैं कि इलेक्ट्रिक व्हीकल के लिए अभी देश तैयार नहीं है और इसे खरीदने पर कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। मगर यह सच है कि अब सड़कों पर ट्रेफिक में काफी संख्या में बिजली से चलने वाले वाहन नज़र आने लगे हैं। शहरों में इलेक्ट्रिक रिक्शाओं की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। महंगी कारें ही नहीं बैटरी से चलने वाले छोटे स्कूटर भी लगातार अपनी बढ़ी हुई उपस्थिति दर्शा रहे हैं। अब यह स्पष्ट है कि आने वाले समय में देश में पेट्रोल और डीज़ल के वाहनों का स्थान इलेक्ट्रिक वाहन तेजी से लेंगे। इसके लिये वाहन उद्योग और उपभोक्ता दोनों तैयार लग रहे हैं। उद्योग जगत का अनुमान है कि वर्ष 2030 तक देश में कुल वाहनों की बिक्री में बैटरी से चलने वाले वाहनों की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत तक हो जाएगी। अधिकृत आंकड़ों के अनुसार अभी देश में बैटरी से चलने वाले करीब 14 लाख वाहन सड़कों पर हैं। राजस्थान में भी 82 हजार से अधिक ऐसे वाहन चल रहे हैं। भारी उद्योग के राज्य मंत्री ने पिछली बार राज्यसभा में एक लिखित जवाब में बताया था कि 3 अगस्त 2022 तक भारत में सबसे ज़्यादा इलेक्ट्रिक व्हीकल के तौर पर थ्री-व्हीलर यानी ई-रिक्शा मौजूद हैं, जिनकी संख्या तब क़रीब 8 लाख थी। उसके बाद टू-व्हीलर का नंबर आता है जो पांच लाख से ऊपर है, और फिर चार पहियों वाली गाड़ियां आती हैं, जो 50 हज़ार से थोड़ी ज़्यादा संख्या में इस्तेमाल हो रही हैं। उत्साहवर्धक आंकड़े बताते हैं कि वित्तीय वर्ष 2021-22 में देश में इलेक्ट्रिक व्हीकल की बिक्री उसके पिछले वित्तीय वर्ष के मुकाबले तीन गुना बढ़ी। जलवायु और पर्यावरण संरक्षण तथा कार्बनिक ईंधन के कम होते स्त्रोतों के चलते दुनिया भर में पेट्रोल और डीज़ल के वाहनों की जगह इलेक्ट्रॉनिक वाहनों को अपनाने के प्रयास चल रहे है। इन प्रयासों में बिजली से चलने वाले वाहनों की क्षमता बढ़ाने और उन्हें उपभोक्ताओं को वाजिब दाम पर मुहैया कराना शामिल है। बिजली से चार्ज होकर चलने वाले वाहनों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिये केंद्र सरकारने पिछले काफी समय से क्रमवार अनेक कदम उठाये हैं। इनमें एक है इलेक्ट्रिक व्हीकल पर लगने वाले जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया जाना। इसके अलावा चार्जिंग स्टेशनों की जगहों का चयन और उनके लिये स्थानीय निकायों के नियमों की व्यवस्था करना और बैटरी स्वेपिंग के विकल्प की संस्थानिक व्यवस्थाएं करना भी शामिल है।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों से जुड़े आंकड़ों के साथ ही उन परेशानियों और चुनौतियों की भी चर्चाएं हो रही हैं हमारे सामने खड़ी हैं। इलेक्ट्रिक गाड़ियों की क़ीमत पेट्रोल या डीज़ल गाड़ियों की तुलना में ज़्यादा होती है। भले ही सरकार इन पर अलग-अलग तरह की रियायतें दे रही है, लेकिन फिर भी इन्हें खरीदने के लिये ठाहक को पेट्रोल-डीज़ल की गाड़ियों के मुकाबले अधिक दाम देने पड़ते हैं। बाज़ार के विशेषज्ञों का कहना है कि जब बिजली से चलने वाले वाहनों की बिक्री बढ़ेगी और प्रतिस्पर्धा आएगी तब उनके दाम कम होंगे क्योंकि बाज़ार की ताकतें कम मुनाफे पर अधिक संख्या में माल बेच कर कुल लाभ अधिक कमा लेती हैं। इसके अलावा इन वाहनों पर उत्पादन लागत भी समय के साथ कम होने की आशा की जा सकती है। इलेक्ट्रिक गाड़ियों में लीथियम आयन बैट्रियों का इस्तेमाल किया जाता है। बताया जाता है कि ये बैट्रियां छह से सात साल तक ही चल पाती हैं। इसके बाद इन्हें बदलना पड़ता है। बैट्रियों का कम जीवन काल ऐसे वाहन खरीदने वालों के मन में संशय पैदा करता हैं। दरअसल एक बैट्री की कीमत किसी इलेक्ट्रिक गाड़ी के तीन-चौथाई रकम के बराबर होती है।

बिजली से चार्ज होकर चलने वाले वाहनों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिये केंद्र सरकार ने पिछले काफी समय से क्रमवार अनेक कदम उठाये हैं। इनमें एक है इलेक्ट्रिक व्हीकल पर लगने वाले जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया जाना। इसके अलावा चार्जिंग स्टेशनों की जगहों का चयन और उनके लिये स्थानीय निकायों के नियमों की व्यवस्था करना और बैटरी स्वेपिंग के विकल्प की संस्थानिक व्यवस्थाएं करना भी शामिल है।

हालांकि सरकार ने पिछले साल प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजना को मंज़ूरी दी थी। यह योजना देश में एडवांस केमिस्ट्री सेल (एसीसी) के निर्माण के लिए लाई गई, जिससे बैट्री की कीमतों को कम किया जा सके। देश में इलेक्ट्रिक गाड़ियों के लिए चार्जिंग स्टेशन की भारी कमी अभी देखने को मिलती है। जिस तरह हमें हर हाइवे या सड़क पर पेट्रोल पंप दिख जाते हैं, उसके मुकाबले चार्जिंग स्टेशन बहुत ही कम जगहों पर मिलते हैं। यह स्वाभाविक ही है क्योंकि अभी बिजली से चलने वाले वाहनों की संख्या कम है। भारत सरकार के मुताबिक देशभर में इस समय 1740 पब्लिक चार्जिंग स्टेशन चल रहे हैं। कई बार यह सुझाव दिया जाता है कि पेट्रोल पंप पर ही इलेक्ट्रिक गाड़ियों को चार्ज करने की सुविधा भी दी जानी चाहिए। लेकिन इसमें एक बड़ी चुनौती यह है कि इलेक्ट्रिक गाड़ियों को चार्ज करने में एक से पांच घंटे का समय लगता है। ऐसे में बिजली के वाहनों को चार्ज करना किसी गाड़ी में पेट्रोल, डीज़ल या सीएनजी डलवाने जितना तेज़ी से नहीं हो सकता। इसके अलावा घर पर वाहन की बैट्री को चार्ज करने में भी अलग तरह की चुनौतियां हैं। आमतौर पर दोपहिया गाड़ियों या ई-रिक्शा की बैट्री को लोग घरों में ही चार्ज करते हैं। इसमें लंबा वक़्त लगता है इसलिये सुबह गाड़ी तैयार रखने के लिए उसे रात में चार्ज पर लगा दिया जाता है। चार्जिंग स्टेशन की कमी के साथ ही गाड़ियों की रेंज को लेकर भी ड्राइवरों के मन में डर पैदा होता है। अक़्सर लंबी दूरी तक गाड़ी चलाने वाले ड्राइवर इलेक्ट्रिक गाड़ियों की कम रेंज से परेशान होते दिखते हैं। लेकिन अब धीरे-धीरे तकनीकी कुशलता से यह रेंज बढ़ाई जा रही है। ब्यूरो ऑफ़ एनर्जी एफिसिएंसी के मुताबिक दोपहिया इलेक्ट्रिक गाड़ियों की रेंज 84 किलोमीटर प्रति चार्ज बताई गई है। वहीं चौपहिया इलेक्ट्रिक गाड़ियों की औसत रेंज 150 से 300 किलोमीटर प्रति चार्ज बताई गई है। सरकार का कहना है कि बेहतर बैट्री और ज़्यादा चार्जिंग स्टेशन लगवा कर इस समस्या को दूर किया जा रहा है। इलेक्ट्रिक गाड़ियों में हर कंपनी अपने अलग-अलग चार्जिंग पोर्ट देती है। इससे इलेक्ट्रिक गाड़ियों के लिए यूनिवर्सल चार्जिंग सिस्टम बनाने में बड़ी दिक्कत होती है। भारत के ईवी मार्केट में अभी भी चार्जिंग पोर्ट के लिए कोई एक मानक तय नहीं किया गया है। यह दिक्कत सबसे ज़्यादा दोपहिया इलेक्ट्रिक गाड़ियों दिखती है जहां अलग-अलग तरह की बैट्री और उनके अलग-अलग चार्जिंग पोर्ट बाज़ार में मिलते हैं। आने वाले समय में सरकार या बाज़ार स्वयं ऐसा मानक बना सकते हैं। वैज्ञानिक बताते हैं कि गाड़ियों की परफॉर्मेंस में मौसम और तापमान का भी बड़ा योगदान होता है। बिजली के वाहनों के लिये तो मौसम तथा तापमान और ज़्यादा बड़े फैक्टर बन जाते हैं। सामान्यतौर पर किसी इलेक्ट्रिक गाड़ी के बेहतर परफॉर्मेंस के लिए औसत तापमान की रेंज 15 से 40 डिग्री सेल्सियस मानी जाती है। लेकिन भारत में जहां पहाड़ी इलाकों में तापमान बेहद नीचे गिर जाता है तो वहीं पश्चिमी इलाकों में तापमान बहुत ऊपर रहता है। ऐसे में पूरे देश के लिए एक तरह की इलैक्ट्रिक गाड़ियों से काम नहीं चल सकता। मगर बढ़ते प्रदूषण और तेल की बढ़ती कीमतों को देखते हुए यह तो तय है कि आने वाला समय इलेक्ट्रिक गाड़ियों का ही है।

बिजली से चलने वाहनों का समय आ गया है इसका प्रमाण है कि ऐसे वाहन दुनिया भर में अपना स्थान बनाने लगे हैं। उपलब्ध आंकड़ों और उनके आधार पर लगाए गये अनुमानों के अनुसार, इलेक्ट्रिक-वाहन की दुनिया भर में बिक्री ने पिछले साल एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर पार कर लिया है। उसने पहली बार लगभग 10 प्रतिशत की बाजार हिस्सेदारी हासिल कर ली। कुल बाजार में बिजली से चलने वाले वाहनों का हिस्सा मुख्यत: यूरोपीय संघ और चीन में बढ़ रहा है। पिछले साल इलेक्ट्रिक वाहनों की वैश्विक बिक्री लगभग 7.8 मिलियन यूनिट थी, जो उसके पिछले वर्ष से 68 प्रतिशत अधिक थी। इस परिवर्तन के दौर में भारत भी पीछे नहीं है जहां इन वाहनों के निर्माण और बिक्री में तेजी आ रही है। इसके लिये सरकारी स्तर पर जो प्रारम्भिक तैयारियां की गई है वह भी मददगार साबित हो रही है। नयी तकनीक वाले इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण और संचालन के लिये कानूनों में आवश्यक संशोधन किये गये हैं तथा उनकी बिक्री को प्रोत्साहन देने के लिये अनेक उपाय किये गये हैं। आम तौर पर आधारभूत ढांचा तैयार करने में शासन तंत्र बहुत धीमे काम करता है किन्तु यह जानना सुखकर है कि इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की व्यवस्थाएं करने में बेहद त्वरित गति से भविष्य को ध्यान में रख कर काम हुआ है। उधर निजी निर्माण क्षेत्र भी पीछे नहीं है और वह भारतीय ग्राहकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिये तत्पर है। बाजार की प्रतिस्पर्धा भी इन वाहनों की गुणवत्ता तो सुनिश्चित करेगी ही साथ ही उनके दामों पर भी नियंत्रण रखेगी। बाजार के समीक्षकों का कहना है कि आने वाले समय में जब वाहनों की बिक्री का वॉल्यूम बढ़ेगा उससे भी इनके दामों में कमी आएगी। यह सभी के लिये लाभ का सौदा होगा और पर्यावरण के संरक्षण में एक लंबी छलांग भी होगी और इसमें भारत अग्रिम पंक्ति में खड़ा मिल सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

बाजरा सहित मोटे अनाज की विदेशों में करनी होगी एग्रेसिव मार्केटिंग

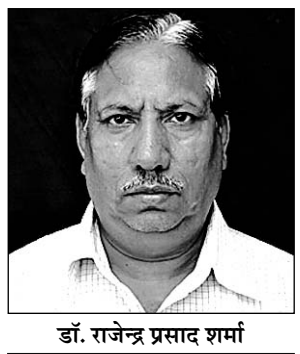

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

जंक फूड के जद में आए दुनिया के देशों को मोटे अनाज का महत्व समझाने की पहल तो भारत ने 2018 को कदन्न वर्ष मनाकर ही कर दी थी और उसी का परिणाम रहा कि मार्च, 2021 में भारत द्वारा मोटे अनाज के महत्व को एक बार फिर समझाने के लिए 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष घोषित करने का प्रस्ताव रखा तो दुनिया के 72 देशों ने भारत के प्रस्ताव का समर्थन किया। अब योजनावद्ध तरीके से विदेशों में भारत के मोटे अनाज के निर्यात को बढ़ावा देने के प्रयास शुरु कर दिए गए हैं। दिसंबर में रोम में अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष का आगाज हो चुका है। विदेशी धरती पर बायर सेलर मीट जैसे आयोजन आरंभ कर दिए गए हैं। उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच सीधा संवाद कायम करने की कार्ययोजना पर अमल शुरु हो गया है। दरअसल अब लोगों को समझ आने लगा है कि कुपोषण के खिलाफ मोटा अनाज हथियार के रुप में उपयोग में लाया जा सकता है तो दूसरी और हाइपरटेंशन और शुगर जैसी बीमारियों में भी मोटा अनाज कारगर सिद्ध हो सकता है।

वह दिन दूर नहीं जब दुनिया के देश हमारे बाजरे के स्वाद से रुबरु होने लगेंगे। आज मोटे अनाज को देश और विदेश दोनों ही जगह लोकप्रिय बनाना शुरु हो गया है। अब भारत के मोटे अनाज खासतौर से बाजरा को दुनिया के देशों में पहुंचाने की पहल आरंभ हुई है। सरकार ने विदेशों में मोटे अनाज को लोकप्रिय बनाने और बाजरा आदि के निर्यात को बढ़ाने का पूरा रोडमैप तैयार कर क्रियान्वयन आरंभ कर दिया है। एपिडा सहित अन्य निर्यातक संस्थाओं द्वारा इसके लिए संयुक्त प्रयास किए जा रहे हैं तो विदेशों में रोड शो, फूड फेस्टिवल, कॉन्क्लेव आदि के आयोजन से मोटे अनाज से बने उत्पादों से विदेशियों को आकर्षित करने और निर्यात को बढ़ावा देने के प्रयास शुरु हो गए हैं। दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सांसदों को मोटे अनाज से तैयार व्यंजनों से लंच दिया जा चुका है। अन्य आयोजनों में भी मोटे अनाज से तैयार व्यंजनों को भी प्रमुखता से स्थान दिया जा रहा है। बाजरा व अन्य मोटे अनाज और उनसे तैयार उत्पादों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बाजार तैयार करने की सकारात्मक शुरुआत हुई है जिसके परिणाम प्राप्त भी होने लगे हैं।

यही कोई चार-पांच दशक पुरानी बात होगी। संदर्भ तो राजस्थान से ही ले रहा हूं पर कमोबेस यही स्थिति देश के अन्य प्रदेशों में भी रही होगी। जब घर पर कोई मेहमान आता था या तीज त्यौहार होता था तभी घर में मीठे के रुप में चांवल और गेहूं की चपाती बना करती थी। अन्यथा दिन-प्रतिदिन का खाना तो सर्दियों में बाजरा-मक्का की रोटी, बाजरा की राबड़ी या मक्का का दलिया या गर्मियों में जौ का दलिया और इसके साथ इसी तरह से मोटे अनाज की रोटी और हरी सब्जियां, कढ़ी जिसे गांव देहात की बोली में खाटा कहकर पुकारा जाता था बड़े चाव के साथ के खाते थे। फिर एक दौर चला जब मोटे अनाज की जगह गेहूं ने ले ली और फिर आज तो लोग गेहूं चांवल को भी छोड़कर जंक फूड पर जोर देने लगे हैं जिसके परिणाम साफ-साफ दिखाई देने लगे हैं। दवाइयों के सहारे जीवन गुजरने लगा है तो इम्यूनिटी भी बुरी तरह से प्रभावित होने लगी है। खैर यह तो रही एक बात।

अब यदि हम खेती किसानी की भी चर्चा करें तो देखेंगे कि मोटे अनाज की खेती कम लागत और कम पानी की खेती होती है। अब वह चाहे बाजरा हो, मक्का हो, रागी हा, ज्वार हो या और इसी तरह का मोटा अनाज। दूसरी बात यह कि इनमें रोग भी कम लगते हैं तो जहरीले कीटाणु नाशकों का उपयोग भी ना के बराबर ही होता है। इस सबके बावजूद एक बात और मोटे अनाज का रकबा धीरे-धीरे घटने के बावजूद यदि बाजरे की ही बात करें तो सारी दुनिया में उत्पादित कुल बाजरे का 41 फीसद बाजरा हमारे देश में उत्पादित होता है। राजस्थान में तो बाजरा खरीफ की प्रमुख फसलों में से एक है। आज सभी राजनीतिक दल और किसान समर्थक संगठन किसानों की आय बढ़ाने की बात कर रहे हैं। तो यह भी साफ हो जाना चाहिए कि मोटे अनाज के निर्यात की मार्केटिंग सही तरीके से होती है और इसके उत्पादों को बाजार में आक्रामक रणनीति के साथ उतारा जाता है तो अंततोगत्वा इसका फायदा किसान को ही जाना है। यह अपने आप में कटु सत्य है।

अन्तरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष का फायदा उठाने के लिए नई रणनीति के अनुसार आगे बढ़ना होगा। हांलाकि सरकार ने दक्षिण अफ्रिका, दुबई, जापान, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैण्ड सहित विदेशों में रोड़ शो, प्रदर्शनी, फूड फेस्टिवल आदि आयोजित करने का रोडमेप तैयार किया गया है। निश्चित रुप से इसके परिणाम सकारात्मक ही प्राप्त होंगे। क्योंकि कदन्न वर्ष के बाद जिस तरह से 2021-22 में जिस तरह से बाजरा के निर्यात में 8 प्रतिशत से भी अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है उससे यह साफ हो जाता है कि विदेशों में बाजरा सहित भारतीय मोटे अनाज की मांग बढ़ेगी और इसका लाभ देश के किसानों को भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से मिलेगा। अब सरकार को मोटे अनाज का रकबा बढ़ाने, रोगरोधी व कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन देने वाले किस्में विकसित करने जैसे ठोस कदम भी उठाने पड़ेंगे जिससे देशी और विदेशी दोनों स्तर पर लाभ मिल सके।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

ग्राम पंचायत घटोर व भाखरिया में बिजली संकट

- **बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों की भी पढ़ाई बाधित हो रही है**
- **घटोर के ग्रामीणों ने उपखंड अधिकारी को ज्ञापन देकर समस्या बताई**

बाप, (निसं)। जोधपुर जिले में बाप समिति क्षेत्र की ग्राम पंचायत घंटोर व भाखरियां में बीते डेढ माह से बिजली समस्या से ग्रामीण बेहद परेशान है। बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों की भी बिजली के अभाव में पढ़ाई बाधित हो रही है।

घटोर के ग्रामीणों ने उपखंड अधिकारी को ज्ञापन देकर बताया कि घटोर में करीब डेढ महीने से विद्युत सप्लाई अनियमित बनी हुई है। जिसके कारण विद्यार्थियों के साथ आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ता है। सुबह पांच बजे ही बिजली चली जाती है। दिन में भी लंबे समय तक बिजली सप्लाई बाधित रहती है। शाम के समय भी सुचारू रूप से बिजली नहीं मिल पा रही है। ग्रामीणों ने रोष प्रकट करते हुए बताया कि डिस्कॉम कार्यालय में संपर्क करने पर संतोषजनक जवाब तक नहीं दिया जा रहा है। अगले माह 10 वी व 12वी की बोर्ड परीक्षाएं शुरू होगी। जिसकी तैयारी को लेकर बच्चों ने पढाई शुरू कर दी है, लेकिन बिजली के अभाव में उनकी पढाई भी बाधित हो रही है।

इस दौरान बालमद्दीन, शिबू खां, शैतानराम, मजीद खां, सदीक, हुजुर, अयूब, मेहरदीन, आरूफ, अश्कर आदि मौजूद रहे। इसी तरह भाखरिया के ग्रामीणों ने गांव स्थित जीएसएस पर प्रदर्शन किया तथा डिस्कॉम के एक्सईएन के नाम का ज्ञापन वहां कार्यरत लाइनमैन को सौंपा। सरपंच पेंपो सहित ग्रामीणों ने बताया कि भाखरिया पंचायत में डिस्कॉम ने कृषि कनेक्शन फीडर से ही घरेलू कनेक्शन दे रखे है। इस वजह से आम उपभोक्ताओं को 6 से 7 घंटा बिजली ही मिल पा रही है। यह भी निर्बाध रूप से नहीं मिल पा रही है। इसमें भी बिजली आती जाती रहती है। बिजली के अभाव में लोगों को काफी परेशानी झेलनी पड़ रही है।

ग्रामीणों ने कहा कि घरेलू विद्युत लाइन नलकूप लाइन से अलग करके स्थाई समाधान किया जाए, अन्यथा ग्रामीण आंदोलन करने पर मजबूर होंगे। इस मौके पर चतुराराम, यासीन, याकुब, बाबूराम, असलम, अकरम, गनीखां, मौलाना जोसफ सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

फाइटर पायलट प्रतिभा पूनिया की घोड़ी पर बैठाकर बिंदौरी निकाली

- **सुजानगढ़ में पारीक समाज के अध्यक्ष ओमप्रकाश बोहरा ने अपनी सातवीं पुत्री आईना पारीक की भी घोड़ी पर बैठाकर बिंदौरी निकाली**

सादुलपुर/सुजानगढ़, (निसं)। भारतीय सेना की लड़ाकू विमान उड़ाने वाली फाइटर पायलट प्रतिभा निवासी नरवासी हाल राजगढ़ की शादी से पूर्व घोड़ी पर बैठाकर डीजे की देशभक्ति धुनों के साथ बिंदौरी निकाली गई।

पीटीआई चंदगीराम पूनिया के पुत्रों विक्रम व रामनिवास पूनिया ने सर्वोदय स्कूल के पीछे स्थित निवास पर बान दिया एवं बिंदौरी निकाली। इस मौके पर मामा सुनील श्योराण, भाई प्रेम पूनिया, मनजीत पूनिया कृष्ण महड़ा, शिक्षक नेता मनोज पूनिया, कृष्ण गवालिसर व संदीप पूनिया सर्वोदय स्कूल आदि ने भाग लिया। इसी दौरान प्रतिभा के पिता सैनिक छोटूराम पूनिया एवं माता वरिष्ठ अध्यापक उर्मिला पूनिया मौजूद रहे।

वहीं सुजानगढ़ में गोपीनाथ मन्दिर के पास रहने वाले पारीक समाज के अध्यक्ष ओमप्रकाश बोहरा ने अपनी सातवीं पुत्री आईना पारीक की शादी बडे ही धूमधाम से की।

ओमप्रकाश बोहरा ने कहा कि उनके सात पुत्रियां है। जिसकी शादी 26 जनवरी को है। शादी से पहले उन्होंने अपनी पुत्री की घोड़ी पर बिठाकर डी.जे के साथ बन्दौरी निकाली। बन्दौरी में वार्डवासी पण्डित लालचंद कौशिक, राजकुमार पारीक, बीदासर पंचायत समिति प्रधान संतोष मेघवाल, जयश्री दाधीच, कमल दाधीच, गणेश मण्डावरिया ने आईना पारीक को वैवाहिक जीवन की बधाई और शुभकामनायें दी।

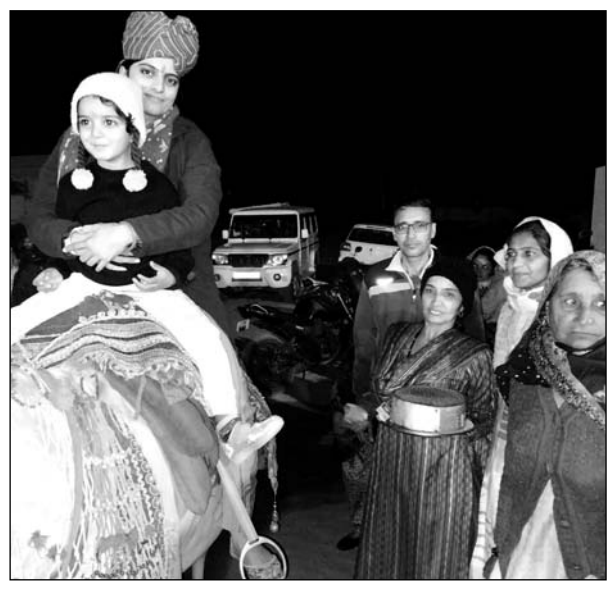

भारतीय सेना की लड़ाकू विमान उड़ाने वाली फाइटर पायलट प्रतिभा की बिंदौरी निकाली गई।

ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 811वें सालाना उर्स की रौनक परवान चढ़ने लगी

- **राज्यपाल कलराज मिश्र, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के इंद्रेश कुमार व रालोद प्रमुख चिराग पासवान की ओर से चादर पेश**
- **राज्यपाल ने संदेश में प्रदेशवासियों के सुखद स्वास्थ्य, खुशहाली और संपन्नता की दुआ की**

अजमेर, (कासं)। विश्व विख्यात सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 811वें सालाना उर्स की रौनक परवान चढ़ने लगी है। धार्मिक रस्मों में अकीदतमंद शामिल होकर सराबोर हो रहे हैं। मंगलवार को उर्स की दूसरी महफिल संपन्न हुई। दरगाह दीवान द्वारा गुसल की रस्म निभाई गई।

राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के इंद्रेश कुमार व राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल के प्रमुख चिराग पासवान की ओर से चादर पेश की गई। राज्यपाल मिश्र का संदेश आम जायरीन को पढ़कर सुनाया गया। ख्वाजा साहब के उर्स में शरीक होने के लिए पाकिस्तानी जायरीन का दल बुधवार को अजमेर आएगा। ख्वाजा गरीब नवाज के 811वें उर्स के मौके पर नेताओं और अभिनेताओं की ओर से दरगाह में चादर पेश की जा रही है। इस कड़ी में बॉलीवुड की अभिनेत्री सोनिया शर्मा द्वारा चादर पेश की गई, साथ ही सभी कलाकारों की अच्छी सेहत और कामयाबी के लिए दुआ मांगी गई।

मंगलवार को दरगाह के ऐतिहासिक महफिल खाने में दरगाह दीवान की सदारत में दूसरी महफिल में कव्वालों ने ख्वाजा साहब की शान में सूफियाना कलाम पेश किए। देर रात्रि दरगाह दीवान जेनुल आबेदीन अली खान ने ख्वाजा साहब की पवित्र मजार पर गुसल की रस्म अदा की। राज्यपाल कलराज मिश्र की ओर से ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती के 811 वें सालाना उर्स के मौके पर मंगलवार को दरगाह पर चादर पेश की गई।

अजमेर में राज्यपाल के प्रमुख विशेषाधिकारी गोविंद राम जायसवाल ने मंगलवार को मजार शरीफ पर पंहुच कर राज्यपाल की तरफ से चादर पेश की। उनके साथ परिसहाय स्क्वाड्रन लीडर राहुल भार्गव भी थे। जियारत सैय्यद बारि चिश्ती एवं सैय्यद वसीम चिश्ती ने करवाई। इस दौरान राज्यपाल मिश्र का संदेश भी पढकर उन्होंने सुनाया। राज्यपाल मिश्र ने इस अवसर पर अपने संदेश में प्रदेशवासियों के सुखद स्वास्थ्य, खुशहाली और संपन्नता की दुआ करते हुए देश-दुनिया से अजमेर आ रहे जाइरीन को मुबारकबाद भी दी।

ख्वाजा साहब के 811वें सालाना उर्स में शामिल होने के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों बिहार, उत्तर प्रदेश, कोलकाता, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, केरल आदि से बड़ी संख्या में जायरीन के आने का सिलसिला जारी है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की ओर से 811वें उर्स पर चादर बुधवार को पेश की जाएगी।

राज्यपाल कलराज मिश्र के प्रमुख विशेषाधिकारी गोविंद राम जायसवाल ने मजार शरीफ पर पहुंच कर राज्यपाल की तरफ से चादर पेश की।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 25 जनवरी, 2023

माघ मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 8:05 तक, परिघ योग सांय 6:15 तक, विष्टि करण दिन 12:35 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 2:29 पर मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

कुमार योग दिन 12:35 से रात्रि 8:05 तक है। रवियोग रात्रि 8:05 तक रहेगी। आज भद्रा दिन 11:35 तक रहेगी। आज विनायक चतुरथी, श्रीगणेश पूजा और बसन्त पंचमी, पंचक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:59 तक, शुभ 11:19 से 12:34 तक, चर 3:19 से 4:38 तक, लाभ 4:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:58

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा।

कन्या
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित मामलों में सोच-विचार हो सकता है। उचित परामर्श मिलेगा। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृश्चिक
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
घर-परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।